Sahitya Academy: पद्मा सचदेव ने डोगरी भाषा को केवल देश नहीं, बल्कि विदेशों तक में पहचान दिलाई: डॉ. कर्ण सिंह

साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्य पद्मा सचदेव की स्मृति में आभासी मंच पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया. (File Photo)

Padma Sachdev: प्रख्यात डोगरी एवं हिंदी कवयित्री तथा साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्य पद्मा सचदेव को याद करते हुये प्रख्यात लेखक एवं विद्वान डॉ. कर्ण सिंह ने कहा कि उन्होंने डोगरी भाषा को केवल देश में ही नहीं बल्कि विदेशों तक में पहचान दिलाई. उनका जाना केवल एक साहित्यकार का जाना नहीं बल्कि एक पूरे संस्थान का जाना है.

- NEWS18HINDI
- LAST UPDATED : AUGUST 18, 2021, 17:17 IST

SHARE THIS:

नई दिल्ली. साहित्य अकादेमी (Sahitya Academy) द्वारा प्रख्यात डोगरी एवं हिंदी कवयित्री तथा साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्य पद्मा सचदेव (Padma Sachdev) की स्मृति में आभासी मंच पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया.

सभा के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अकादेमी की तरफ से पद्मा जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वह डोगरी भाषा और संस्कृति को केंद्र में लाईं और उसके विकास के लिए उन्होंने आजीवन निःस्वार्थ सेवा की.

प्रख्यात लेखक एवं विद्वान डॉ. कर्ण सिंह ने उन्हें याद करते हुए कहा कि उन्होंने डोगरी भाषा को केवल देश में ही नहीं बल्कि विदेशों तक में पहचान दिलाई. उनका जाना केवल एक साहित्यकार का जाना नहीं बल्कि एक पूरे संस्थान का जाना है.

प्रख्यात लेखक एवं विद्वान डॉ. कर्ण सिंह ने उन्हें याद करते हुए कहा कि उन्होंने डोगरी भाषा को केवल देश में ही नहीं बल्कि विदेशों तक में पहचान दिलाई. उनका जाना केवल एक साहित्यकार का जाना नहीं बल्कि एक पूरे संस्थान का जाना है.

प्रख्यात हिंदी कहानीकार ममता कालिया ने उन्हें अपनी दबंग और दिलकश दोस्त के रूप में याद करते हुए कहा कि उनकी उपस्थिति किसी भी समारोह में जान डाल देती थी. एक अच्छे लेखिका के साथ-साथ वह अच्छी इंसान भी थीं. उनकी ज़िंदादिली उनकी रचनाओं में भी झलकती है. उनका सबसे बड़ा योगदान लोकजीवन को साहित्य से जोड़ना है. वे हम सबको विरासत में अपनी किताबें और ख़ुशदिली छोड़ गई हैं.

साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्य पद्मा सचदेव की स्मृति में आभासी मंच पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया.

चंद्रकांता ने उन्हें एक उदार और विनम्र व्यक्तित्व की धनी लेखिका के रूप में याद करते हुए कहा कि वह जो ठान लेती थी, अवश्य करती थीं. उनकी रचनाओं में उनका वतन हमेशा रहा.

असमिया लेखिका कार्बी डेका हाजरिका ने कहा कि अपनी भाषा के लिए उनकी लड़ाई हम सबके लिए मार्गदर्शक बनी रहेगी. प्रख्यात पंजाबी कवयित्री वनिता ने उनको भारतीय भाषाओं की बड़ी लेखिका के रूप में याद करते हुए कहा कि उनकी उपस्थिति हम सबके बीच एक माँ की तरह थी जो सबको अपनत्व से रोमांचित करती थी.

अंग्रेजी एवं हिंदी लेखक हरीश त्रिवेदी ने कहा कि उन्होंने संस्मरण और साक्षात्कार दोनों विधाओं को मिलाकर एक नई विधा का आविष्कार किया जो बेहद रोचक और आत्मीयता से भरपूर थी. उन्होंने लोकगीत की परंपरा को आधुनिक कविता में ढालकर लोकप्रिय बनाया. वह केवल जम्मू को ही नहीं बल्कि पूरे जम्मू-कश्मीर को प्यार करने वाली थीं. उनका दृष्टिकोण बहुत व्यापक था.

प्रख्यात डोगरी कवि ललित मगोत्रा ने अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि उनका जाना डोगरी भाषा-भाषियों को जो घाव दे गया है, उसकी पूर्ति असंभव है. पद्मा जी कभी भी किसी लीक पर नहीं चलीं बल्कि उन्होंने हमेशा खुद और दूसरों के लिए भी नए रास्ते तैयार किए. जबतक डोगरी रहेगी उनकी याद बनी रहेगी. उनका जाना जैसे घर से बुजुर्ग का चले जाना है.

प्रख्यात तेलुगु कवि ए. कृष्णाराव ने उनकी कविताओं के अनुवाद के समय जो अनुभव किए थे, उन्हें साझा करते हुए कहा कि उनकी कविताओं में गहरी अंदरूनी संवेदनाओं ने काफी प्रभावित किया. डोगरी लेखक मोहन सिंह ने उन्हें डोगरी की पुरजोर आवाज के रूप में याद करते हुए कहा कि उन्होंने डोगरी को अपने क्षेत्र में ही नहीं देश-विदेश में भी मंच प्रदान किया. उन्होंने केवल रिश्ते बनाए ही नहीं बल्कि निभाए भी, उनके बिना डोगरी जैसे अनाथ हो गई है.

प्रख्यात गुजराती कवि सितांशु यशश्चंद्र ने उनके शब्दों के सृजन के विलक्षण यत्नों को याद करते हुए कहा कि उनके लेखन पर विश्वास करना ही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी.

नसीब सिंह मन्हास ने उन्हें डोगरी भाषा के राजदूत के रूप में याद किया. पद्मा जी के भाई ज्ञानेश्वर शर्मा ने उन्हें ऐसी प्रेरणादायक स्त्री के रूप में याद किया जो हमेशा आम लोगों के शोषण के खिलाफ खड़ी रही. पद्मा सचदेव के पति सरदार सुरिन्दर सिंह ने सभी के प्रति धन्यवाद व्यक्त करते हुए कहा कि पद्मा जी के आने से जो खुशनसीबी उनके जीवन में आई थी, अब वे उसकी कमी महसूस करेंगे.

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष ने उनके निधन को भारतीय साहित्य जगत की अपूरणीय क्षति मानते हुए कहा कि बड़ा रचनाकार कभी मरता नहीं बल्कि उसके लिखे शब्द हमेशा हमारे बीच रहते हैं. उनका लेखन और व्यक्तित्व हम सबकी स्मृतियों में रहेगा और हमेशा मार्गदर्शक का काम करता रहेगा. श्रद्धांजलि सभा का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया.

दैनिक भास्कर

पदमा सचदेव के बिना डोगरी भाषा और साहित्य अधूरे: डॉ. कर्ण सिंह

डोगरी कवि ललित मगोत्रा ने अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि उनका जाना डोगरी भाषा-भाषियों को जो घाव दे गया है उसकी पूर्ति असंभव है। पद्मा कभी भी किसी लीक पर नहीं चलीं बल्कि उन्होंने हमेशा खुद और दूसरों के लिए भी नए रास्ते तैयार किए। जबतक डोगरी रहेगी उनकी याद बनी रहेगी। उनका जाना जैसे घर से बुजुर्ग का चले जाना है।

भास्कर ऑनलाइन
साहित्य
Updated On : Wed 18th August 2021, 07:57 PM

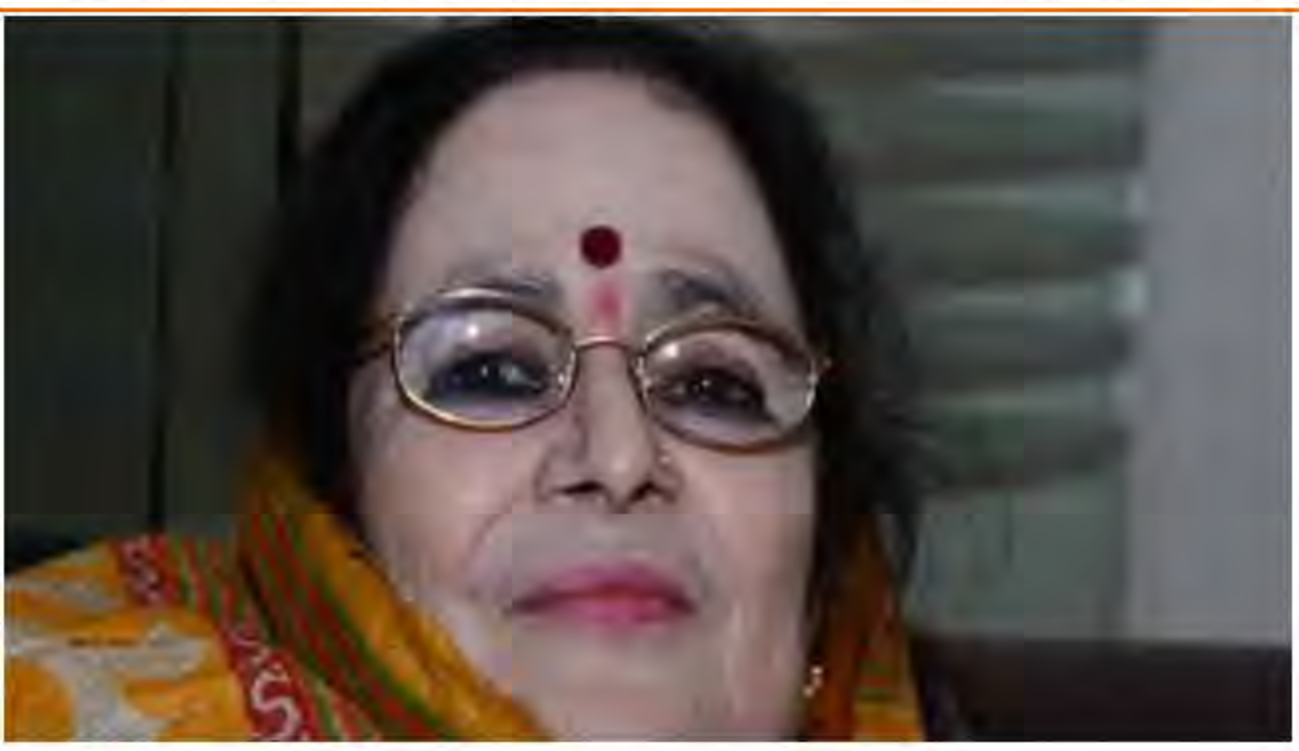

नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी में डोगरी एवं हिंदी कवयित्री पदमा सचदेव की स्मृति में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सभा के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अकादेमी की तरफ से पदमा जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वह डोगरी भाषा और संस्कृति को केंद्र में लाईं और उसके विकास के लिए उन्होंने आजीवन निःस्वार्थ सेवा की।

प्रख्यात लेखक एवं विद्वान डॉ. कर्ण सिंह ने उन्हें याद करते हुए कहा कि उन्होंने डोगरी भाषा को केवल देश में ही नहीं बल्कि विदेशों तक में पहचान दिलाई। उनका जाना केवल एक साहित्यकार का जाना नहीं बल्कि एक पूरे संस्थान का

कहानीकार ममता कालिया ने उन्हें अपनी दबंग और दिलकश दोस्त के रूप में याद करते हुए कहा कि उनकी उपस्थिति किसी भी समारोह में जान डाल देती थी। एक अच्छे लेखिका के साथ-साथ वह अच्छी इंसान भी थीं। उनकी ज़िंदादिली उनकी रचनाओं में भी झलकती है। उनका सबसे बड़ा योगदान लोकजीवन को साहित्य से जोड़ना है। वे हम सबको विरासत में अपनी किताबें और खुशदिली छोड़ गई हैं।

चंद्रकांता ने उन्हें एक उदार और विनम्र व्यक्तित्व की धनी लेखिका के रूप में याद करते हुए कहा कि वह जो ठान लेती थी, अवश्य करती थीं। उनकी रचनाओं में उनका वतन हमेशा रहा।

असमिया लेखिका कार्बी डेका हाजरिका ने कहा कि अपनी भाषा के लिए उनकी लड़ाई हम सबके लिए मार्गदर्शक बनी रहेगी। पंजाबी कवयित्री वनिता ने उनको भारतीय भाषाओं की बड़ी लेखिका के रूप में याद करते हुए कहा कि उनकी उपस्थिति हम सबके बीच एक माँ की तरह थी जो सबको अपनत्व से रोमांचित करती थी।

अंग्रेजी एवं हिंदी लेखक हरीश त्रिवेदी ने कहा कि उन्होंने संस्मरण और साक्षात्कार दोनों विधाओं को मिलाकर एक नई विधा का आविष्कार किया जो बेहद रोचक और आत्मीयता से भरपूर थी। उन्होंने लोकगीत की परंपरा को आधुनिक कविता में ढालकर लोकप्रिय बनाया। वह केवल जम्मू को ही नहीं बल्कि पूरे जम्मू-कश्मीर को प्यार करने वाली थीं। उनका दृष्टिकोण बहुत व्यापक था।

डोगरी कवि ललित मगोत्रा ने अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि उनका जाना डोगरी भाषा-भाषियों को जो घाव दे गया है उसकी पूर्ति असंभव है। पद्मा कभी भी किसी लीक पर नहीं चलीं बल्कि उन्होंने हमेशा खुद और दूसरों के लिए भी नए रास्ते तैयार किए। जबतक डोगरी रहेगी उनकी याद बनी रहेगी। उनका जाना जैसे घर से बुजुर्ग का चले जाना है।

प्रख्यात तेलुगु कवि ए. कृष्णाराव ने उनकी कविताओं के अनुवाद के समय जो अनुभव किए थे, उन्हें साझा करते हुए कहा कि उनकी कविताओं में गहरी अंदरूनी संवेदनाओं ने काफी प्रभावित किया। डोगरी लेखक मोहन सिंह ने उन्हें डोगरी की पुरजोर आवाज के रूप में याद करते हुए कहा कि उन्होंने डोगरी को अपने क्षेत्र में ही नहीं देश-विदेश में भी मंच प्रदान किया। उन्होंने केवल रिश्ते बनाए ही नहीं बल्कि निभाए भी, उनके बिना डोगरी जैसे अनाथ हो गई है।

गुजराती कवि सितांशु यशश्चंद्र ने उनके शब्दों के सृजन के विलक्षण यत्नों को याद करते हुए कहा कि उनके लेखन पर विश्वास करना ही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

नसीब सिंह मन्हास ने उन्हें डोगरी भाषा के राजदूत के रूप में याद किया। पदमा के भाई ज्ञानेश्वर शर्मा ने उन्हें ऐसी प्रेरणादायक स्त्री के रूप में याद किया जो हमेशा आम लोगों के शोषण के खिलाफ खड़ी रही।

पदमा सचदेव के पति सरदार सुरिन्दर सिंह ने सभी के प्रति धन्यवाद व्यक्त करते हुए कहा कि पद्मा के आने से जो खुशनसीबी उनके जीवन में आई थी, अब वे उसकी कमी महसूस करेंगे।